

11. प्यारे नन्हे बेटे को

लेखक- विनोद कुमार शुक्ल

जन्म- 1 जनवरी 1937

वर्तमान उम्र- 83 वर्ष

जन्म-स्थान- राजनाँदगाँव, छत्तीसगढ़

निवास – रायपुर, छत्तीसगढ़

वृत्ति- इंदिरा गाँधी कृषि

विश्वविद्यालय में एसोशिएट प्रोफ़ेसर, निराला सृजनपीठ में जून 1994 से जून 1996 तक अतिथि साहित्यकार रहे ।

कविता संग्रह

- **लगभग जयहिंद (1971)**
- **वह आदमी चला गया नया गरम कोट पहिनकर विचार की तरह)1981)**
- **सब कुछ होना बचा रहेगा)1992)**
- **अतिरिक्त नहीं)2000)**
- **कविता से लंबी कविता (2001)**
- **आकाश धरती को खटखटाता है (2006)**
- **पचास कविताएँ)2011)**
- **कभी के बाद अभी)2012)**
- **कवि ने कहा ' - चुनी हुई कविताएँ)2012)**
- **प्रतिनिधि कविताएँ (2013)**

उपन्यास

- **नौकर की कमीज़ (1979)**
- **खिलेगा तो देखेंगे (1996)**
- **दीवार में एक खिड़की रहती थी (1997)**
- **हरी घास की छप्पर वाली झोपड़ी और बौना पहाड़ (2011)**
- **यासि रासा त (2017)**
- **एक चुप्पी जगह (2018)**

कहानी संग्रह

- **पेड़ पर कमरा (1988)**

महाविद्यालय (1996)

सम्मान – रघुवीर सहाय स्मृति पुरस्कार (1992), दयावती मोदी कवि शेखर सम्मान (1997), साहित्य अकादमी पुरस्कार (1999)

- ❖ इनके उपन्यासों का कई भारतीय भाषाओं में अनुवाद तथा 'पेड़ पर कमरा' कहानी संग्रह का इतावली भाषा में अनुवाद । 'नौकर की कमीज' उपन्यास पर मणि कौल द्वारा फिल्म का निर्माण भी किया गया ।

पाठ का प्रश्न उत्तर

1. 'बिटिया' से क्या सवाल किया गया है ?

उत्तर- बिटिया से यही सवाल किया गया है कि बतलाओ, आसपास लोहा कहाँ है ।

2. 'बिटिया' कहाँ-कहाँ लोहा पहचान पाती है ?

उत्तर- बिटिया अपनाने आसपास उपस्थित लोहे को पहचान पाती है । उसके आसपास चिमटा, कलछुल, अंगीठी, सँड़सी, दरवाजे की सांकल, कब्जे, उसमें लगी किले आदि है, जिनमें वह लोहे को पहचानती है ।

3. कवि लोहे की पहचान किस रूप में काराते है ? यही पहचान उनकी पत्नी किस रूप में कराती है ?

उत्तर- कवि लोहे की पहचान अपने आसपास कि वस्तुओं जैसे फावड़ा, कुदाली, टंगिया, खुरपी, बसुला, बैलगाड़ी के पहिए पर चढ़ा पट्टा, बैलो के गले में लगे घंटी आदि से कराते है ।

4. लोहा क्या है ? इसकी खोज क्यों की जा रही है ?

उत्तर –लोहा एक धातु है जो अपनी मजबूती, बहुउपयोगिता और सर्वव्यापकता के लिए प्रसिद्ध है । पाठ में चर्चित भिलाई, बलाडिला में लोहा की खदान भी प्रसिद्ध है । इसकी खोज इसलिये की जा रही है क्योंकि यह मानव के लिए बहुत ही उपयोगी है अर्थात् यह हमारी जिंदगी और संबंधों में घुल-मिल गया है ।

5. 'इस घटना से उस घटना तक' – यहाँ किन घटनाओं की चर्चा है ?
उत्तर – 'इस घटना से उस घटना तक' का तात्पर्य बच्ची के छोटे से लेकर व्यक्ति के बेटे को बड़े हो जाने तथा लड़की के लिए उपयुक्त वर ढूँढकर उसकी शादी करने से है, जिससे उसे जिंदगी और मानवीय संबंधों की सच्ची समझ हो सके ।

6. अर्थ स्पष्ट करे-

कि हर वो आदमी ,जो मेहनतकश
लोहा है,हर वो औरत
दबी सताई,बोझ उठाने वाली, लोहा ।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियाँ विनोद कुमार शुक्ल द्वारा रचित कविता 'प्यारे नन्हे बेटे को' से लिया गया है । इस पंक्ति के माध्यम से कवि यह बताना चाहते हैं कि हर वो आदमी जो अपनी जीविका के लिए हर विषम परिस्थितियों में , गर्मी, सर्दी, बरसात, में कठिन परिश्रम करता है , वो भी लोहा के समान ही है । हर वो औरत जो अत्याचार सहकर भी अपने दुखों को झेल रही है वो भी लोहा के समान ही है । अतः कवि ने यह बताना चाहते हैं कि लोहा साधारण धातु न रहकर परिश्रमी इंसान तथा दुख सहने वाले लोगों के कर्म का प्रतीक है ।

7. कविता में लोहे की पहचान अपने आसपास में की गई है । बिटिया, कवि और उनकी पत्नी जिन रूपों में इसकी पहचान करते हैं, ये आपके मन में क्या प्रभाव उत्पन्न करते हैं ? बताइए ।

उत्तर- बिटिया, कवि और उनकी पत्नी जिन रूपों में इसकी पहचान करते हैं, उससे हमारे मन में निम्नलिखित प्रभाव उत्पन्न हो रहे हैं-

(क) यह हमारे आसपास कदम-कदम पर मिल जाता है ।

(ख) यह घर- गृहस्थी में सभी जगह व्याप्त है ।

(ग) यह मजबूती, सहनशीलता और दृढ़ता का प्रतीक है ।

(घ) यह हमारी जिंदगी और संबंधों को भी प्रभावित करता है ।

(ङ) लोहा हमारा आधार है ।

8. मेहनतकश आदमी और दबी-सतायी, बोझ उठाने वाली औरत में कवि द्वारा लोहे की खोज का क्या आशय है ?

उत्तर- कवि यह बताना चाहते हैं कि हर वो आदमी जो अपनी जीविका के लिए हर विषम परिस्थितियों में , गर्मी, सर्दी, बरसात, में कठिन परिश्रम करता है , वो भी लोहा के समान ही है । हर वो औरत जो अत्याचार सहकर भी अपने दुखों को झेल रही है, वो भी लोहा के समान ही है । इंसान की शारीरिक मानसिक दृढ़ता और कर्म लोहे की सदृश है ।

9. यह कविता एक आत्मीय संसार की सृष्टि करती है पर वह संसार बाह्य निरपेक्ष नहीं है । इसमें दृष्टि और संवेदना, जिजीविषा और आत्मविश्वास सम्मिलित है । इस कथन की पुष्टि कीजिए ।

उत्तर- यह कथन पूरी तरह सत्य है कि यह कविता आत्मीय संसार की सृष्टि करती है । कवि ने जिस आत्मीय संसार की सृष्टि की है, उसमें मेहनतकश आदमी के परिश्रमपूर्ण जीवन तथा शोषित , पीड़ित, अत्याचार को सहती हुई औरत की घर-परिवार की जिम्मेदारियों का बोझ उठाए जीवन जीने की अभिलाषा को भी शामिल किया गया है । इसके अलावा कवि ने बेटे को बड़े और बेटी के लिए उपयुक्त वर मिलने तथा उसके शादी करने की बात भी कही है । इस प्रकार हम कह सकते हैं कि यह कविता दृष्टि और संवेदना, जिजीविषा और आत्मविश्वास युक्त आत्मीय संसार की सृष्टि करती है ।

10. बिटिया को पिता 'सिखलाते' है तो माँ 'समझाती' है । ऐसा को ?

उत्तर- ऐसा इसलिए है क्योंकि पिता पुरुष होने के साथ ही स्वभावतः उत्साही एवं निडर होता है । इसलिए पुरुष परिणाम की चिंता किए बिना कार्य कर देता है । एक स्त्री होने के कारण माँ को जीवन के कटु अनुभवों का ज्ञान होता है । इसीलिए वो अनेक प्रकार से बिटिया को समझाती है ।

Join the 'Telegram' for PDF

आपका अपना YouTube चैनल "Science Sangrah"

By- Monu Sir & anu sir

Like share

comment

subscribe

SCIENCE SANGRAH